# शेर और आदमी जैसी कहानियॉ

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Sher Aur Aadmi JaIsi Kahaniyan-17 (Lion and Man Like Stories-17)
Cover Page picture : A Lion in the Cage
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

# Map of the World

विंडसर, कैनेडा

मार्च 2018

## Contents

सीरीज़ की भूमिका ..... 4
शेर और आदमी जैसी कहानियॉ ..... 5
1 शेर और आदमी ..... 7
2 शिकारी और शेर ..... 14
3 हमेशा के लिये गया पेड़ ..... 21
4 शैतान चीता ..... 27
5 एक चीता, एक ब्राह्मण और एक गीदड़ ..... 35
6 ब्राह्मण, मगर और लोमड़ा ..... 42
7 आदमी और सॉप ..... 46
8 एक गोरा और एक सॉपिन ..... 51
9 एक यात्री का कारनामा ..... 54

# सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

# शेर और आदमी जैसी कहानियॉ

हमने एक नयी सीरीज़ शुरू की है "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कथाऐं शामिल की गयीं हैं जो सुनने में एक सी लगती हैं पर अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती हैं।

बच्चों जैसे तुम लोग कहानियॉ सुनते हो वैसे ही दूसरे देशों में भी वहॉ के बच्चे कहानियॉ सुनते हैं। क्योंकि कहानियॉ हर समाज की अलग अलग होती हैं इसलिये उन बच्चों की कहानियॉ भी तुम्हारी कहानियों से अलग हैं।

पर कुछ कहानियॉ ऐसी भी हैं जो भिन्न भिन्न देशों में कही सुनी जाती हैं पर सुनने में एक सी लगती हैं। यहॉ कुछ ऐसी ही कहानियॉ दी जा रही हैं। ये सब कहानियॉ कुछ इस तरह से चुनी गयी हैं कि ये सब कहानियों एक सी कहानियों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ऐसी बहुत सी कहानियॉ हैं। इन पुस्तकों की पहली कहानी वह कहानी है जो बहुत लोकप्रिय कहानी है उसके बाद ही फिर उसकी जैसी और कहानियॉ दी गयी हैं। ऐसी कहानियॉ हम "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे।

इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक थी "बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियॉ"[1]। अब तक इस सीरीज़ में **16** पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं। इन सब पुस्तकों के नाम इस पुस्तक के पीछे दिये हुए हैं।

शेर और आदमी की कहानी बहुत पुरानी और एक बहुत ही लोकप्रिय कहानी है। यह कहानी घरों में बच्चों को उनके माता पिता दो ढाई साल की उम्र से ही सुनाना शुरू कर देते हैं। बहुत पसन्द आती है उनको यह कहानी। पर ऐसी कहानी केवल भारत में ही नहीं सुनायी जाती बल्कि और देशों में भी कही सुनी जाती है। अगर तुम्हारे पास ऐसी ही कोई और कहानी हो तो हमें जरूर लिखना हम उसको अपने अगले संस्करण में प्रकाशित करने की भरपूर कोशिश करेंगे।

ये कथाऐं बहुत शिक्षाप्रद हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को सीख देने के अलावा तुम लोगों का भरपूर मनोरंजन भी करेंगी।

[1] "One Story Many Colors-1 – "Cat and Rat" Like Stories

# 1 शेर और आदमी[2]

यह कहानी मेरे बचपन की पहली पहली कहानियों में से एक है। और शायद यह सबसे पहली कहानी है जो मैंने तब सुनी थी जब हम अक्ल का मतलब भी नहीं समझते थे।

सच्चाई तो यह है कि अक्ल वाकई बहुत ही बड़ी और ताकतवर चीज़ होती है। वह ताकतवर से ताकतवर दुश्मन को भी हरा सकती है।

मगर इसके साथ एक परेशानी है वह यह कि यह बाजार में नहीं मिलती इसलिये इसको खरीदा नहीं जा सकता। पर विद्वानों का कहना है कि कोशिश करने से इसको बहुत ही थोड़ा सा बढ़ाया जा सकता है।

एक बार एक आदमी कहीं जा रहा था कि रास्ते में उसने शेर का एक पिंजरा रखा देखा। उसमें एक शेर बन्द था। वह पिंजरे में बेचैनी से इधर उधर घूम रहा था। वह आदमी उस शेर की मजबूरी को देख कर मुस्कुरा दिया।

[2] The Lion and the Man – a folktale from India. This folktale is very popular in India and is told to the very little children.

असल में वह शेर कई दिनों से उस पिंजरे में बन्द था। दिन भर में जो भी उस रास्ते से गुजरता वह शेर उसी से प्रार्थना करता कि वह उसे उस पिंजरे में से निकाल दे पर कोई भी उसे इस डर से पिंजरे से बाहर नहीं निकालता था कि पिंजरे में से निकल कर वह उसी को खा जायेगा।

कई दिनों से पिंजरे में बन्द होने की वजह से वह भूखा भी बहुत था। सो हर बार की तरह से उसने इस आदमी से भी अपने आपको बाहर निकालने की प्रार्थना की।

यह आदमी बहुत दयालु था। शेर को भूख से तड़पता देख कर उसे उस शेर पर दया आ गयी। वह उसे निकालने ही वाला था कि उसको ध्यान आया कि शेर तो भूखा है निकलते ही उसे खा जायेगा।

इसलिये उसने शेर से कहा — "मगर शेर भाई, मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ। तुम तो पिंजरे में से निकलते ही मुझे खा जाओगे।"

शेर बोला — "नहीं भाई, मैं वायदा करता हूँ कि मैं तुमको बिल्कुल नहीं खाऊँगा। तुम तो मुझे इस मुसीबत से छुटकारा दिलाओगे फिर मैं तुम्हें कैसे खा सकता हूँ। मेहरबानी करके बस तुम मुझे किसी तरह इस पिंजरे से बाहर निकाल दो।"

उस आदमी को अभी भी विश्वास नहीं आया कि शेर पिंजरे से बाहर निकलने के बाद उसे नहीं खायेगा, सो उसने एक बार फिर

शेर से पूछा — "पक्का? तुम मुझे पिंजरे से बाहर निकलने के बाद नहीं खाओगे?"

शेर बोला — "पक्का वायदा आदमी भाई, मैं तुम्हें बिल्कुल नहीं खाऊॅगा।"

यह सुन कर वह आदमी पिंजरे के ऊपर चढ़ा और उसका दरवाजा खोल दिया। शेर बहुत ही खुश हुआ। वह तुरन्त ही बाहर निकल आया और आज़ादी की एक ऑगड़ाई ली।

वह भूखा तो था ही उस आदमी से बोला — "भाई, मुझे बाहर निकालने के लिये तुमको बहुत बहुत धन्यवाद। पर मुझे बहुत भूख लगी है। यहॉ मुझे खाने के लिये और तो कुछ दिखाई नहीं देता जिसे मैं खा लूॅ इसलिये मैं तुमको ही खा कर अपना पेट भर लूॅगा।"

यह सुन कर तो वह आदमी बहुत घबराया और थर थर कॉपने लगा। उसने तो शेर के वायदे पर ही वह पिंजरा खोला था और शेर को आजाद किया था और वही शेर अब उसको खाना चाहता है।

सच है किसी के साथ भलाई करने का जमाना ही नहीं रह गया। पर अब वह क्या करे? अपनी जान कैसे बचाये? उसकी तो जान पर बन आयी थी।

उसने शेर को समझाने की बहुत कोशिश की कि उसने शेर को पिंजरे से बाहर निकाल कर उसके ऊपर कितना बड़ा एहसान किया है। कम से कम उसी एहसान के बदले में वह उसको बख्श दे। नहीं तो उसने जो उससे वायदा किया था उसी की लाज रख ले।

परन्तु शेर ने उसकी एक न सुनी। उसको तो भूख लगी थी वह तो बस उसको खाना चाहता था।

उस आदमी को पसीना आ गया। मौत उसकी ऑखों के सामने नाच रही थी। उसने चारों ओर देखा कि शायद उसे कोई सहायता के लिये मिल जाये पर उसे कहीं कोई दिखाई ही नहीं दे रहा था और उसको कोई और रास्ता नजर नहीं आ रहा था।

तभी उसको एक और आदमी उधर आता नजर आ गया। उस आदमी को कुछ आशा बॅधी कि शायद वह उसकी कुछ सहायता कर सके।

दूसरा आदमी जब पास आ गया तो उस दूसरे आदमी ने देखा कि एक आदमी एक शेर के पास खड़ा है और उसे कुछ समझाने की कोशिश कर रहा है।

दूसरा आदमी समझ गया कि जरूर ही दाल में कुछ काला है। वह पहले तो डरा फिर कुछ सोचता हुआ आगे बढ़ा और पहले आदमी से पूछा — "भाई, क्या बात है। तुम कुछ परेशान से नजर आ रहे हो। क्या मैं तुम्हारी कुछ सहायता कर सकता हूॅ?"

पहले आदमी ने शुरू से आखीर तक उसे सारा किस्सा बता दिया। यह दूसरा आदमी कुछ अक्लमन्द था।

वह कुछ सोच कर पहले आदमी से बोला — "तुम इस पिंजरे पर चढ़ जाओ और जब मैं इशारा करूॅ तो इस पिंजरे का दरवाजा तुरन्त बन्द कर देना। तब तक मैं शेर से निपटता हूॅ।"

पहला आदमी तुरन्त पिंजरे के ऊपर चढ़ गया और दूसरे आदमी के इशारे का इन्तजार करने लगा।

इधर दूसरा आदमी शेर से बोला — "शेर जी, आपने सुना कि इस आदमी ने क्या कहानी बतायी? मैं इस आदमी की कहानी पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं करता।

इसी लिये मैंने इस आदमी को ऊपर भेज दिया। अब मैं यह कहानी आपके मुॅह से सुनना चाहता हूॅ। मुझे यकीन है कि आप मुझे यह कहानी ठीक से ही बतायेंगे।"

शेर को यह सुन कर बहुत अच्छा लगा कि आदमी आदमी पर विश्वास नहीं कर रहा था और वह उस कहानी को उससे सुनना चाह रहा था। तो शेर ने भी अपनी कहानी उस आदमी को सुना दी।

आदमी बोला — "शेर जी, वैसे यह आपकी यह बड़ी गलत बात है कि जिस आदमी ने आपको आजाद किया आप उसी को खाना चाहते हैं।"

शेर बोला — "आदमी भाई, मैं क्या करूॅ। मैं कई दिनों का भूखा हूॅ। उस समय मुझे उस आदमी के अलावा कोई और पिंजरे में से बाहर निकालने वाला दिखायी ही नहीं दे रहा था तो अपने को बाहर निकलवाने के लिये मैंने उससे उसको न खाने का वायदा कर लिया।

पर बाहर निकल कर मुझे और कोई चीज़ खाने के लिये दिखायी नहीं दी तो मैं उसी को ही खा रहा था। अब मुझे आप दिखायी दे गये है तो मैं आपको खा लेता हूँ।"

यह सुन कर तो दूसरा आदमी भी परेशान हो गया पर साहस के साथ बोला — "शेर जी, बाकी सब तो मेरी समझ में आ रहा है पर एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही कि आप कह रहे थे कि आप इस पिंजरे में बन्द थे।

पर आप जैसा ताकतवर जानवर इस पिंजरे में बन्द हुआ ही कैसे? मुझे बिल्कुल भी विश्वास नहीं होता कि आप जैसा ताकतवर शेर भी इस पिंजरे में बन्द हो सकता है। क्या आप मुझे इसमें बन्द हो कर दिखायेंगे कि आप इस पिंजरे में कैसे बन्द थे?"

शेर इस दूसरे आदमी को देख कर बहुत खुश था कि अब उस को दो दो आदमी खाने के लिये मिलेंगे। इस खुशी में वह यह भूल गया कि वह क्या करने जा रहा है।

वह तुरन्त ही पिंजरे में अन्दर जा कर खड़ा हो गया और बोला — "जनाब मैं यहॉ इस तरह बन्द था।"

जैसे ही वह शेर पिंजरे के अन्दर गया उस आदमी ने ऊपर वाले आदमी को इशारा कर दिया और उसने पिंजरे का दरवाजा नीचे गिरा दिया।

इस तरह शेर फिर से पिंजरे में बन्द हो गया और इस तरह दूसरे आदमी ने अपनी अक्लमन्दी से अपने दोनों आदमियों की जान बचायी।

बच्चों, जिन लोगों का स्वभाव जैसा होता है वे अपने स्वभाव के अनुसार ही काम करते हैं। इसलिये उनका स्वभाव जान कर ही उनकी बातों पर भरोसा करना चाहिये।

दूसरे, बेवकूफ लोग अपनी बेवकूफी से खुद भी मुश्किल में पड़ जाते हैं और दूसरों के लिये भी मुश्किल खड़ी कर देते हैं जैसा कि पहले आदमी ने किया।

जबकि अक्लमन्द लोग अपनी मुश्किलें भी हल कर लेते हैं और दूसरों को भी मुश्किलों से निकाल लाते हैं जैसा कि दूसरे आदमी ने किया।

# 2 शिकारी और शेर[3]

शेर और आदमी जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये पश्चिमी अफ्रीका के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से चुनी है। देखो बहॉ के बच्चे इस कथा को किस तरह से कहते सुनते हैं।

बहुत पहले की बात है कि एक देश के एक गॉव में एक शिकारी रहता था। एक दिन उसने अपना तीर कमान उठाया और जंगल में शिकार करने चला गया।

जंगल में उसने सारे दिन में एक हिरन और दो खरगोश मारे और वह इससे बहुत खुश था। उसने हिरन अपनी गरदन में लटका लिया और दोनों खरगोश अपनी कमर में बॉध लिये।

वह खुशी से सीटी बजाता चला जा रहा था और सोचता जा रहा था कि वह अपने शिकार को अपने लोगों में कैसे बॉटेगा कि तभी उसका ध्यान किसी की सहायता के लिये पुकारने की चीख ने खींच लिया।

उसको लगा कि वह चीख किसी शेर की थी। वह चौंक गया और डर भी गया। उसने सोचा — "शायद यह मेरे शिकार के पीछे होगा।"

[3] The Hunter and the Lion – a Yoruba folktale from Nigeria, West Africa. Adapted from the Book "The Orphan Girl and the Other Stories". by Offodile Buchi. 2001.

वह जल्दी से चीख आने वाली दिशा की तरफ मुड़ा पर उसको ऐसा कुछ दिखायी नहीं दिया जिससे वह यह जान सके कि वह शेर किस तरह की सहायता के लिये चीख रहा था।

इतनी ही देर में वही चीख फिर सुनायी दी। इस बार वह समझ गया कि यह चीख किस तरफ से आयी थी। यह शेर था यह तो पक्का था पर कहॉ था यह उसको दिखायी नहीं दे रहा था।

उसने ऊपर नीचे देखा तो देखा कि एक शेर एक पेड़ की दो डालों के बीच से तकिये की तरह लटक रहा है।

शिकारी ने बड़ी नाउम्मीदी से अपना सिर हिलाया और बुदबुदाया — "जैसा कि मैंने सोचा था यह तो वही है।"

उसने अपना हिरन तो नीचे जमीन पर रखा और अपना तीर कमान उठाया। शेर को देखते हुए उसने अपना तीर कमान पर चढ़ाया और कमान की रस्सी धीरे से खींची।

उसको लगा कि शेर तो हिल भी नहीं रहा कि तभी शेर बोला — "मेहरबानी करके मेरी सहायता करो मैं यहॉ फॅस गया हूॅ।"

यह सुन कर शिकारी ने अपना तीर कमान नीचे कर लिया और बहुत ही सावधानी से उस पेड़ का चक्कर लगाया।

वह यह देखना चाहता था कि शेर उसके साथ कहीं कोई चाल तो नहीं खेल रहा पर उसको लगा कि नहीं वह चाल नहीं खेल रहा बल्कि वह सचमुच में ही फॅस गया है और दर्द में है।

शिकारी ने पूछा — "अरे तुम यहॉ कैसे आये? और यह सब तुम्हारे साथ किसने किया?"

शेर बोला — "पहले मुझे नीचे उतारो फिर मैं तुम्हें बताता हूॅ।"

शिकारी ने शेर को नीचे उतरने में सहायता की। उसने उसको फॅसने वाली जगह से निकाला और नीचे उतारा।

शेर बोला — "तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। यह उस बदमाश हाथी का काम है। उसी ने मुझे ऊपर फॅसा दिया था और मैं तीन दिन से यहीं लटका हुआ हूॅ।"

शिकारी बोला — "वह तो ठीक है पर अब तो तुम नीचे आ गये हो अब तुम जाओ। मुझे भी अपने परिवार के पास जाना है।"

अब जैसा कि तुमको मालूम है बच्चो, शेर उस पेड़ के ऊपर तीन दिन से फॅसा पड़ा था। वह भूखा था, थका हुआ था और प्यासा था सो उसने शिकारी से एक और चीज़ के लिये प्रार्थना की।

शेर बोला — "भाई तुमने मेरे ऊपर बड़ी दया की है पर केवल इससे मेरा क्या भला होगा अगर तुम मुझे यहॉ अकेला मरने के लिये छोड़ जाओ। अभी मैं कोई भी शिकार करने के लिये बहुत कमजोर हूॅ क्या तुम मुझे कुछ खाने को दोगे?"

शिकारी बोला — "मैं तुम्हारे लिये खाना कहॉ ढूॅढू?"

शेर बोला — "यह हिरन मेरे लिये काफी है। यह हिरन मुझे दे दो। मुझे तो तुम सच्चे दोस्त लगते हो जिसकी मैं अपनी किसी भी मुसीबत में सहायता ले सकता हूॅ।

मेहरबानी करके अभी तुम मेरी सहायता कर दो और जब मैं अपना शिकार करने के लिये थोड़ा ठीक हो जाऊॅगा तब मैं तुम्हारी इस दया का बदला जरूर चुका दूॅगा।"

शिकारी ने कुछ देर सोचा फिर अपने हिरन को दो हिस्सों में काटा और उसमें से एक हिस्सा शेर को दे दिया और बोला — "ठीक है, इसके लिये तुमको मुझे कुछ देने की जरूरत नहीं है। तुम इसे खाओ और जाओ। अब मैं चलता हूॅ।"

शिकारी ने मुश्किल से अपनी बात खत्म की थी कि शेर ने एक बार में ही अपने हिस्से का हिरन निगल लिया और उससे और मॉस मॉगा। शिकारी ने हिरन का दूसरा हिस्सा भी उसको दे दिया।

शेर ने उसको भी तुरन्त ही खा लिया और फिर शिकारी की कमर में बॅधे हुए खरगोशों की तरफ देखते हुए खाने के लिये कुछ और मॉगा। बेचारे शिकारी ने वे दोनों खरगोश भी उसको दे दिये। उसने उनको भी खा लिया और फिर और खाना मॉगा।

शिकारी बोला — "पर अब तो मेरे पास कुछ भी नहीं है। जो कुछ मैंने आज पकड़ा था वह सब तो मैं तुमको दे चुका।"

शेर बोला — "पर मेरा तो अभी पेट नहीं भरा है। मुझे तीन दिन हो गये हैं खाना खाये हुए। मैं क्या करूॅ।"

इस बीच शेर की निगाह शिकारी के कुत्ते की तरफ थी।

शिकारी बोला — "नहीं नहीं, मेरा कुत्ता नहीं।"

शेर बोला — "पर मेरा तो अभी पेट नहीं भरा। मुझे अभी और खाना चाहिये।"

शिकारी के पास और कोई चारा नहीं था सो उसने शेर को अपना कुत्ता भी खाने के लिये दे दिया।

कुत्ता खा कर शेर बोला — "मुझे अभी और खाना चाहिये।"

अब शिकारी और शेर दोनों आपस में बहस करने लगे।

शिकारी बोला — "तुम्हारे साथ भलाई करने का क्या यही फल है जो तुम मुझे अपनी जान बचाने के बदले में दे रहे हो? क्या भगवान मुझे तुम्हारे साथ भलाई करने के बदले में यही सजा दे रहा है?"

वे जब आपस में इस तरह की बातें कर ही रहे थे कि तभी उनको एक खरगोश आता दिखायी दिया।

खरगोश बोला — "लगता है यहॉ कुछ गड़बड़ है। क्या बात है तुम लोग आपस में क्या बहस कर रहे हो?"

जैसे शिकारी खरगोश का ही इन्तजार कर रहा हो और जैसे कि वह कोई जज हो शिकारी ने अपना मामला खरगोश के सामने रखा। फिर खरगोश शेर की तरफ देखता हुआ बोला कि वह भी अपनी कहानी बताये।

शेर बोला — "यह ठीक कह रहा है। पर मुझे अभी भी भूख लगी है और मुझे अभी और खाना चाहिये।"

खरगोश ने शेर से पूछा — "पर तुम वहाँ उस पेड़ पर फँसे कैसे?"

इस पर शेर ने उसको बताना शुरू किया कि वह उस पेड़ पर कैसे फँस गया था। पर खरगोश बोला कि उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

वह बोला — "जिस तरीके से तुम यह सब मुझे बता रहे हो न, यह सब बहुत ही गड़बड़ घोटाले वाला मामला है। यह कैसे हो सकता है कि तुम तीन दिन तक वहाँ उस पेड़ पर ही फँसे पड़े रहे?

क्योंकि अगर तुम झूठ बोल रहे होगे तो फिर मेरे पास इसके अलावा और कोई चारा नहीं है कि मैं शिकारी की तरफ अपना फैसला सुना दूँ।

मुझे यकीन है कि मैं इसे तब ज़्यादा अच्छी तरह समझ पाऊँगा और ज़्यादा अच्छी तरह से फैसला दे पाऊँगा अगर मैं तुमको उस जगह वैसे ही बैठा देख पाऊँ जैसे कि शिकारी ने तुमको वहाँ बैठे देखा था।"

फिर वह शिकारी की तरफ मुड़ा और उससे बोला कि वह शेर को वहीं रख दे जहाँ वह फँसा हुआ था और जहाँ उसने उसको देखा था ताकि वह देख सके कि वह कहाँ था।

सो शेर मरे जैसा पड़ गया। शिकारी ने उसे उठाया और फिर से उसे उन शाखों के बीच फॅसा दिया। शेर बड़े दर्द के साथ बोला — "मैं यहॉ ऐसे ही फॅसा हुआ था।"

खरगोश बोला — "तो फिर ओ शिकारी। ज़रा यह तो बताओ कि एक टिड्डा जिसको हौर्नबिल[4] ने मारा वह तो बहरा था पर तुम तो आदमी हो और शेर एक जानवर है। तुमने उसको बचाया ही क्यों?

तुमने तो उसे जो कुछ तुम्हारे पास तो वह सब कुछ दे दिया और फिर भी उसको और चाहिये – यानी कि तुम। मार दो इसको।"

यह सुन कर शिकारी ने शेर को मार दिया और उसको अपने घर खाने के लिये ले गया।

उस दिन के बाद उसने कसम खायी कि वह जैसे जैसे उसके सामने चीजें आती जायेंगी वैसे वैसे उनको लेता जायेगा और तब से वह हमेशा से ही वैसा करता आ रहा है खास करके जब भी वह किसी शेर को देखता है।

[4] Hornbill – a kind of bird with bent beak – see its picture above.

# 3 हमेशा के लिये गया पेड़[5]

शेर और आदमी जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे अफ्रीका महाद्वीप के बोट्सवाना देश की लोक कथाओं से ली है। देखने वाली बात यह कि कि छोटा सा खरगोश एक आदमी को शेर से खाने से कैसे बचाता है। आओ देखते हैं।

शेर चिल्लाया — "जल्दी भाग शेर, जल्दी भाग। तुझे बहुत ज्ल्दी जल्दी दौड़ना चाहिये। वे जंगली कुत्ते तो तेरे पीछे ही हैं।"

वे जंगली कुत्ते सारा दिन उस शेर का पीछा करते रहे थे – चट्टानों के ऊपर हो कर, नदियों में से हो कर, झाड़ियों के बीच में से हो कर, रास्ते पर चल कर।

बेचारे शेर को आराम करने का कहीं कोई मौका ही नहीं मिला। उसको ऐसा लग रहा था कि जैसे ही वह एक तरफ मुड़ता था वहॉ पर कुछ और कुत्ते उसका इन्तजार कर रहे होते थे।

पर आखिर उसने उन कुत्तों से बचने के लिये कुछ समय निकाल ही लिया। किस्मत से उसने उसी समय एक आदमी को एक बड़े से पेड़ के नीचे बैठा देखा।

[5] The Gone Forever Tree - a folktale from Botswana, Africa. Adapted from the Web Site : http://folktales.phillipmartin.info/home_gone_forever01.htm
Collected and retold by Phillip Martin

डरे हुए शेर ने आदमी से प्रार्थना की — "जनाब, क्या आप मेरी कुछ सहायता कर सकते हैं? ये जंगली कुत्ते सुबह से मेरा पीछा करते चले आ रहे हैं। मैं इनसे बचने के लिये भागते भागते इतना थक गया हूँ कि अब एक कदम भी और आगे नहीं जा सकता।"

आदमी बोला — "तुम जल्दी से इस पेड़ के पीछे छिप जाओ। मैं कुत्तों को दूसरी तरफ भेज दूँगा। जल्दी करो मुझे उनके पैरों की आवाज सुनायी पड़ रही है। वे बस आते ही होंगे।"

जैसे ही शेर पेड़ के पीछे छिपा सामने की झाड़ियों में से कुत्तों का एक झुंड निकल कर आदमी की तरफ बढ़ा।

उसमें से एक कुत्ते ने आदमी से पूछा — "क्या तुमने किसी शेर को यहॉ से जाते हुए देखा है?"

आदमी बोला — "हॉ देखा तो है। वह उधर पहाड़ी की तरफ भाग गया है। अगर तुम जल्दी से उधर भाग कर जाओगे तो मुझे यकीन है कि तुम उसको जरूर है पकड़ लोगे। वह बहुत थका हुआ लगता था।"

कुत्ते चिल्लाये — "बहुत बहुत धन्यवाद।" और तुरन्त ही पहाड़ी की तरफ भाग गये।

आदमी अपने मन में हॅसते हुए बोला — "मुझे तुम्हारी सहायता करके बड़ी खुशी हुई।"

जब शेर ने देखा कि कुत्तों का झुंड उसके रास्ते से हट गया है तो वह बहुत खुश हुआ और उसके अन्दर एक नयी हिम्मत आ गयी।

वह पेड़ के पीछे से निकल आया और अपने पंजों में उस आदमी को जकड़ लिया।

आदमी चिल्लाया — "अरे यह तुम क्या कर रहे हो?"

शेर बोला — "यह तो साफ दिखायी दे रहा है कि मैं तुमको खाऊँगा।"

आदमी बोला — "पर अभी अभी तो मैंने तुम्हारी जान बचायी है।"

शेर बोला — "इसके लिये मैं तुम्हारी बहुत तारीफ करता हूँ। पर मैं भूखा भी बहुत हूँ और मैं अब इतना थक गया हूँ कि मैं अपना खाना ढूँढने कहीं और नहीं जा सकता। और फिर मैं कहीं और जाऊँ भी क्यों? तुम जो मेरे सामने हो।"

आदमी गिड़गिड़ाया — "मगर तुम मेरे साथ ऐसा नहीं कर सकते।"

शेर चिंघाड़ा — "क्यों नहीं कर सकता। हॉ मैं ऐसा कर सकता हूँ और मैं ऐसा ही करूँगा।"

उसी समय एक बड़ा खरगोश[6] सामने से आता दिखायी दिया। उसने उन दोनों को आपस में बहस करते देखा तो पूछा — "क्या बात है, तुम लोग आपस में क्यों लड़ रहे हो?"

आदमी ने जितनी जल्दी हो सकता था सब कुछ उस बड़े खरगोश को बता दिया।

बड़ा खरगोश मुस्कुराया और बोला — "अगर तुम लोगों को मेरे ऊपर भरोसा हो तो मैं जानता हूॅ कि इस समस्या को कैसे सुलझाना है।

ओ आदमी, इस समस्या को सुलझाने के लिये मुझे "हमेशा के लिये गया पेड़"[7] की एक डंडी चाहिये। क्या तुम मुझे उस पेड़ की एक डंडी ला कर दे सकते हो?"

आदमी यह सुन कर वह डंडी लाने के लिये एक झाड़ी की तरफ चला गया पर उसने इस पेड़ का नाम तो पहले कभी सुना नहीं था सो वह मोफेन के पेड़ की एक डंडी ले कर आ गया।

उस डंडी को देख कर बड़ा खरगोश चिल्लाया — "नहीं नहीं यह नहीं। ओ आदमी, यह वह नहीं है जो मैं चाहता हूॅ। मेरा

[6] Translated for Hare - Hare is different from Rabbit in size and look. Hare is not a domestic animal and live on the ground as opposed to Rabbit who is a domestic animal and lives in burrows – see its picture above.

[7] Gone Forever Tree – in fact he wanted to say that when he goes from here he should "go forever" from there.

मतलब उसी से था जो मैंने तुमसे कहा था – "हमेशा के लिये गया पेड़" की डंडी।"

वह आदमी बड़े खरगोश के लिये वह डंडी लाने के लिये एक बार फिर झाड़ियों की तरफ चला गया पर अभी भी उसने उस पेड़ के बारे न कुछ सुना था और न कभी उसे देखा था। सो अबकी बार वह एक मोकगालो पेड़ की एक डंडी ले आया।

इस बार खरगोश उस आदमी के ऊपर बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "तुम मेरी बात ही नहीं सुन रहे हो ओ आदमी। मुझे "हमेशा के लिये गया पेड़" की एक डंडी चाहिये।

और अबकी बार अगर तुमको उस पेड़ की डंडी न मिले तो "कभी वापस न आओ पेड़"[8] की डंडी भी काम करेगी।"

एक बार फिर से वह आदमी डंडी लाने के लिये झाड़ियों की तरफ बढ़ा।

उस आदमी के जाते ही बड़ा खरगोश शेर से बोला — "यह बेवकूफ आदमी तो सादी सी बात भी नहीं समझता जैसे कि हम और तुम समझते हैं। अगर तुमको कोई ऐतराज न हो तो मैं उसके साथ जा कर उसको वह पेड़ दिखा आऊॅ?"

शेर बोला — "नहीं नहीं मुझे कोई ऐतराज नहीं है। मैं भी तुम्हारे साथ चला चलता पर मैं बहुत थका हुआ हूॅ।"

[8] Never Come Back Tree – in fact he wanted ro say that when you go from here "never come back".

"कोई बात नहीं तुम यहीं आराम करो मैं उसको वह पेड़ दिखा कर अभी आता हूँ।" सो वह बड़ा खरगोश भी आदमी के पीछे पीछे उसको वह पेड़ दिखाने के लिये चल दिया।

शेर वहीं उस पेड़ के नीचे खड़ा खड़ा दोनों का इन्तजार करता रहा पर वे तो दोनों तो जो एक बार गये सो लौटे ही नहीं। वे तो हमेशा के लिये चले गये थे।

इस तरह बड़े खरगोश ने शेर से उस आदमी की और अपनी जान बचायी।

# 4 शैतान चीता[9]

हर देश में मॉऐं दादियॉ और नानियॉ छोटे बच्चों को कहानियॉ सुनाया करती है बंगला देश भी इसका कोई अपवाद नहीं है। यह कहानी बंगला देश में कही सुनी जाती है।

एक बार पास के एक देश में एक बहुत ही प्रसिद्ध राजा रहता था। उसके भी प्रसिद्ध होने का एक कारण था और वह थे उसके अजीबोगरीब शौक। उसका एक अजीबोगरीब शौक था अजीब अजीब जानवरों को इकट्ठा करने और उनको पालने का शौक पर एक दिन उसको एक नया शौक लगा कि वह इन जानवरों से बात करे।

सो उसने अपने राज्य के मन्त्री को बुलवाया और उससे कहा — "संसार के सबसे बुद्धिमान व्यक्तियों को बुलाओ। मैं चाहता हूॅ कि ये जानवर बात करें।"

मन्त्री तो यह सुन कर डर के मारे कॉप गया फिर भी बोला — "महाराज यह काम कैसे सम्भव है?"

पर राजा ने उसके डर की ओर ध्यान न देते हुए कहा — "मुझे तुम्हारे सन्देह और डर नहीं सुनने बस तुम सब बुद्धिमान लोगों को बुलाओ।"

[9] Naughty Tiger – a folktale from Bangla Desh, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.aobbangladesh.org/node/178

बेचारे मन्त्री ने दूर और पास सभी देशों में देश के दूत भेजे। राजा का सन्देश सुन कर दस ऐसे बुद्धिमान लोग राज्य में आ पहुॅचे। काफी कड़ी ट्रेनिंग के बाद वे पॉच जानवरों को बात करना सिखा सके।

राजा तो यह देख कर बहुत ही खुश हो गया। उसने उन लोगों को भरपूर इनाम दिया और फिर संसार के दूसरे देशों के राजाओं को अपना यह नया काम देखने के लिये बुलाया।

जब यह सब अवसर मनाया जा रहा था तो राजा ने एक चीते को सोने के पिंजरे में बन्द करके अपने महल के दरवाजे पर खड़ा कर दिया।

अब जो भी महल में आता चीता उसे नमस्ते करता और कहता — "मेहरबानी करके इस पिंजरे का दरवाजा थोड़ा सा खोल दीजिये।"।

आने वाले लोग यह सुन कर आश्चर्य तो प्रगट करते पर डर के मारे उसका दरवाजा खोलने का साहस कोई नहीं करता। तभी वहॉ सीधासादा एक ब्राह्मण भी आया। वह वास्तव में एक बहुत ही भला आदमी था।

जैसे जैसे वह सड़क पर चलता चला आ रहा था चीते ने उसका भी स्वागत किया और उसको कई बार सिर झुका कर नमस्ते की। वह जब उसके पास आ गया तो उसने उससे भी वही प्रार्थना की जो वह सबसे करता आ रहा था — "मेहरबानी करके इस पिंजरे का

दरवाजा थोड़ा सा खोल दीजिये। मैं यहॉ इस पिंजरे में कई दिनों से बन्द हूॅ। मैं थोड़ी देर बाहर मैदान में घूमना चाहता हूॅ।"।

अब क्योंकि ब्राह्मण एक बहुत ही भला व्यक्ति था उसने सोचा कि शायद यह चीता बेचारा इस पिंजरे में काफी देर से बन्द होगा सो उसने उसके पिंजरे का दरवाजा खोल दिया।

जैसे ही चीते के पिंजरे का दरवाजा खुला वह उसमें से कूद कर बाहर आ गया और एक ॲगड़ाई ले कर ब्राह्मण को बहुत झुक कर प्रणाम किया और दहाड़ कर बोला — "अब ब्राह्मण देवता मैं आपको खाऊॅगा।"

ब्राह्मण तो यह सुन कर सकते में आ गया वह बोला — "यह तुम क्या कह रहे हो। मैंने तो तुम्हारे ऊपर दया की है और तुम्हें पिंजरे से बाहर निकाला है और फिर भी तुम कह रहे हो कि तुम मुझे खाना चाहते हो। तुम्हारा यह व्यवहार तो मेरे साथ ठीक नहीं है।"

चीता बोला — "ऐसा क्यों? सारे लोग इसी तरह से व्यवहार करते हैं।"

ब्राह्मण बोला — "नहीं। असम्भव। ऐसा नहीं हो सकता। तुम दो लोगों से पूछ कर देख लो कि वे क्या कहते हैं।"

चीता राजी हो गया और बोला — "यदि दो लोग आपसे राजी हो गये तो मैं आपको छोड़ दूॅगा पर यदि वे मेरी ओर से बोले तो मैं आपको निश्चित रूप से खा जाऊॅगा।"

ब्राह्मण और चीता दोनों मैदान में चल दिये। वहॉ एक बड़ा सा बरगद का पेड़ खड़ा हुआ था। ब्राह्मण उसको देख कर बोला — "यह मेरा पहला गवाह होगा।"

चीता बोला — "ठीक है आप पहले पेड़ से पूछें।"

ब्राह्मण ने बरगद के पेड़ से पूछा — "बरगद भाई यदि मैं किसी का भला करूँ तो क्या उसे मुझे नुकसान पहुँचाना चाहिये।"

बरगद ने एक लम्बी सी सॉस भरते हुए कहा — "कभी कभी ऐसा भी होता है बाबा। अब मुझे ही देख लो। इस मैदान में मैं एक अकेला पेड़ खड़ा हूँ। जब कड़ी धूप पड़ती है तो मैं लोगों को छाया देता हूँ। गरमी में उनको ठंडक देता हूँ।

पर बदले में मुझे क्या मिलता है। अपनी गायों और बकरियों के खाने के लिये वे मेरी शाखें काट लेते हैं और मेरी पत्तियॉ चुरा लेते हैं।'

यह सुन कर चीते ने हॅस कर अपने होठ चाटे और बोला — "बाबा आपने अपने गवाह की बात सुनी?"

ब्राह्मण बोला — "पर अभी तो मेरा एक गवाह और बचा है।" तभी पेड़ पर बैठा एक चिड़ा बोल पड़ा।

चीता बोला — "इस गवाह से पूछो।"

ब्राह्मण ने सिर ऊपर उठा कर चिड़े से पूछा — "चिड़े भाई यदि मैं किसी का भला करूँ तो क्या उसे मुझे नुकसान पहुँचाना चाहिये।"

चिड़े ने हॉ में अपना सिर हिलाया — "हॉ बाबा कभी कभी ऐसा भी होता है। मुझे ही देख लो। मैं लोगों को खुश करने के लिये यहॉ बैठा बैठा सारा दिन मीठे मीठे गाने गाता रहता हूॅ। जब वर्षा समाप्त हो जाती है तो बहुत सारे कीड़े खा जाता हूॅ। इसके अलावा मैं लोगों को और भी कई मुश्किलों से बचाता हूॅ फिर भी वे मुझे मार देते हैं।"

चीता बोला — "बाबा सुना आपने?"

ब्राह्मण अब सोच में पड़ गया पर उसने आस नहीं छोड़ी वह बोला — "अच्छा मुझे एक मौका और दो। मैं एक और गवाह से पूछ लूॅ। बस आखिरी बार।"

चीते को अपने ऊपर पूरा विश्वास था सो उसने ब्राह्मण को एक और मौका दे दिया — "ठीक है बाबा पर यह आपका आखिरी मौका है बस इसके बाद और नहीं।"

तभी एक गीदड़ वहॉ घूमता घूमता आ गया। ब्राह्मण तुरन्त ही उसकी ओर बढ़ा और बोला — "यह आ गया मेरा आखिरी गवाह।"

वह चाचा गीदड़ की ओर बढ़ा और उससे पूछा — "चाचा गीदड़ यदि मैं किसी का भला करूॅ तो क्या उसे मुझे कोई नुकसान पहुॅचाना चाहिये।"

गीदड़ ने अपनी ऑखों में प्रश्न लिये ब्राह्मण की ओर देखा और पूछा — "क्या बात है बाबा। ज़रा साफ साफ कहो। मुझे ज़रा खोल कर बताओ कि तुम मुझसे क्या पूछना चाहते हो। यदि तुम मुझे खोल कर नहीं बताओगे तो मैं समझ नहीं पाऊॅगा।"

तब ब्राह्मण ने सावधानी से पूरी घटना का रिहर्सल किया — "मैं महल के घास के मैदान में जा रहा था और यह चीता एक सोने के पिंजरे में बन्द था। इसने मुझसे कहा...।"

जब गीदड़ ने ब्राह्मण की सारी कहानी सुन ली तो बोला — "मुझे लगता है कि यह काफी मुश्किल मामला है क्योंकि जब तक मैं महल की सड़क और पिंजरा न देख लूॅ तब तक मैं कुछ कह नहीं सकता।"

सो तीनों पिंजरे की ओर चल दिये। वहॉ जा कर गीदड़ बोला — "अब देख कर मुझे लग रहा कि मैं कुछ कुछ समझ रहा हूॅ। पर फिर भी अब तुम मुझे दोबारा बताओ।"

ब्राह्मण ने फिर से दोहराया — "जब मैं राजा के महल की ओर जा रहा था तो चीता एक सोने के पिंजरे में बन्द था...।"

गीदड़ एक हल्की सी हॅसी हॅसा — "अब ठीक है अब मेरी समझ में आ गया। तुम पिंजरे में थे और चाचा चीता सड़क पर थे। तब...।"

चीता गुस्से में चिल्लाया — "चाचा गीदड़ तुम तो विल्कुल ही बेवकूफ हो। मैं पिंजरे में था।"

गीदड़ बोला — "नहीं नहीं चीते चाचा। ओह यह तो बड़ा मुश्किल सा मामला है चीज़ें मेरे दिमाग में आसानी से नहीं घुस रहीं हैं।"

चीता गुस्से से चिल्लाया — "इसमें मुश्किल क्या है चाचा गीदड़। मुझे नहीं मालूम था कि आप इतने बेवकूफ हैं। यह इतना सीधा सा मामला है और आपकी समझ में ही नहीं आ रहा है। देखिये न मैं कहॉ था।"

कह कर चीता पिंजरे की ओर गया और उसमें जा कर खड़ा हो गया। चीता बस यही तो चाह रहा था। जैसे ही चीता पिंजरे के अन्दर घुसा गीदड़ ने आगे बढ़ कर पिंजरे का दरवाजा बन्द कर दिया।

फिर बोला — "हॉ बाबा अब ठीक है। अब मेरी समझ में आ गया। चीता चाचा ठीक कह रहे थे। अगर आप किसी बुरे आदनी की सहायता करते हैं तो वह आपको नुकसान पहुॅचाने की अवश्य ही कोशिश करेगा।

बाबा आप तो बहुत भले और बुद्धिमान आदमी हैं। आपको चाचा चीते जैसे लोगों से सावधान रहना चाहिये। इस संसार में ऐसे बहुत सारे लोग उन जैसे हैं जो आपको नुकसान पहुॅचा सकते हैं।"

फिर गीदड़ चाचा चीते से बोला — "चाचा चीते मैं बेवकूफ अवश्य हूॅ पर आप क्या हैं?"

कह कर वह हॅसता हुआ अपने रास्ते चला गया और ब्राह्मण राजा के महल चला गया।

# 5 एक चीता, एक ब्राह्मण और एक गीदड़[10]

शेर और आदमी जैसी यह कहानी एशिया महाद्वीप के भारत देश की है – उसके पंजाब प्रान्त की।

एक बार की बात है कि एक चीता एक शिकारी के जाल में पकड़ा गया। शिकारी ने उसे अपने पिंजरे में बन्द कर लिया था। शेर ने उसके डंडों में से निकलने की बहुत कोशिश की पर वह किसी भी तरह उसमें से नहीं निकल सका। और जब वह किसी भी तरह से नहीं निकल सका तो गुस्से और दुख के मारे इधर उधर लोटने लगा और काटने लगा।

इत्तफाक से उधर से एक ब्राह्मण गुजर रहा था तो वह उससे बोला — "ए ब्राह्मण। ओ भले आदमी। मेहरबानी करके मुझे इस पिंजरे में से बाहर निकालो।"

ब्राह्मण नम्रता से बोला — "नहीं भाई नहीं। अगर मैंने तुम्हें यहॉ से निकाल दिया तो तुम मुझे निकलते ही खा जाओगे।"

चीते ने कई कसमें खायीं कि वह ऐसा नहीं करेगा। वह बोला — "बल्कि मैं तो हमेशा तुम्हारा कृतज्ञ रहूँगा और तुम्हारे नौकर की तरह से तुम्हारी सेवा करूँगा।"

---

[10] The Tiger, the Brahman and the Jackal (Tale No 12) – A folktale from Punjab, India, Asia. Adapted from the Web Site : http://digital.library.upenn.edu/women/steel/punjab/punjab-1.html Taken from the book "Tales of the Punjab" By Flora Annie Steel. London: Macmillan & Co. 1894

जब चीता उसके सामने बहुत रोया बहुत गिड़गिड़ाया तो ब्राह्मण का दिल पिघल गया। वह उस पिंजरे का दरवाजा खोलने पर राजी हो गया।

पिंजरे का दरवाजा खुलते ही चीता उसमें से बाहर आ गया और उस ब्राह्मण को पकड़ लिया। उसको पकड़ कर वह बोला — "तुम कितने बेवकूफ हो जो तुमने मुझे पिंजरे में से बाहर निकाल दिया। अब मुझे तुम्हें खाने से कौन रोक सकता है। क्योंकि इतने समय से इसमें बन्द रहने की वजह से तो मुझे बहुत ज़ोर की भूख भी लगी है।"

ब्राह्मण ने उससे अपनी जान की कई बार भीख मॉगी तो उसको केवल एक वायदा मिला कि वह चीते के इस फैसले को ठीक बताने के लिये तीन लोगों से पूछेगा। अगर वे कह देंगे कि हॉ चीता ठीक कर रहा है तब तो वह उसको खा लेगा नहीं तो वह उसे छोड़ देगा।

ब्राह्मण ने सबसे पहले एक पीपल का पेड़ चुना और उससे पूछा कि वह इस बारे में क्या सोचता था। पीपल के पेड़ ने कुछ गुस्से से कहा — "तुम इसकी क्या शिकायत करते हो। क्या जो भी इधर से गुजरता है मैं उसको अपनी छाया नहीं देता पर वे मेरे साथ क्या क्या करते हैं। वे मेरी शाखाऐं तोड़ तोड़ कर अपने जानवरों को खिलाते हैं। इसलिये शिकायत करने की कोई जरूरत नहीं। आदमी बनो।"

ब्राह्मण दुखी दिल से सोचते हुए थोड़ा और आगे बढ़ा तो उसको एक भेंस दिखायी दी जो कुॅए से पानी निकालने के लिये पहिया चला रही थी। उससे पूछने पर उससे भी उसको कोई बहुत अच्छा जवाब नहीं मिला।

क्योंकि वह बोली — "तुम बहुत ही बेवकूफ हो जो किसी से भलाई की आशा रखते हो। मुझे ही देखो। जब मैं उनको दूध देती हॅू तब वे मुझे बिनौला और तेल की रोटी खिलाते हैं और आज जब मैं उनको दूध नहीं दे पा रही हॅू तो उन्होंने मुझे यहॉ जोत रखा है और खाने के लिये मुझे बेकार की चीज़ें देते हैं।"

ब्राह्मण यह सुन कर बहुत दुखी हुआ। उसने फिर सड़क से उसकी राय पूछी तो सड़क बोली — "जनाब। आप भी कितने बेवकूफ हैं जो किसी से किसी चीज़ की आशा रखते हैं। मुझे देखिये मैं सबके लिये कितनी फायदे की चीज़ हॅू फिर भी सब अमीर हो या गरीब बड़ा हो या छोटा कोई मुझे कुछ भी नहीं देता और बल्कि मुझे अपने पैरों तले रौंदते हुए चला जाता है।

इतना ही नहीं वे मेरे ऊपर अपने पाइप की राख बिखेरते हैं और अनाज का भूसा बिखेरते हैं।"

यह सुन कर ब्राह्मण बहुत दुखी हो कर वापस लौट पड़ा। वापस आते समय रास्ते में उसको एक गीदड़ मिल गया। उसने ब्राह्मण को पुकार कर कहा — "क्या बात है ब्राह्मण देवता। आप

तो ऐसे दुखी लग रहे हैं जैसे किसी ने मछली को पानी से बाहर निकाल कर फेंक दिया हो।"

ब्राह्मण ने उसको जो कुछ भी उसके साथ हुआ था अपनी सारी कहानी सुना दी।

जब वह अपनी सारी कहानी सुना चुका तो गीदड़ बोला — "बड़ी अजीब सी बात है। बात कुछ समझ में नहीं आयी क्योंकि सब कुछ इस तरह से आपस में मिल कर गड्ड मड्ड हो गया है कि मुझे इसका ओर छोर ही पता नहीं चल रहा है। अगर आपको कोई ऐतराज न हो तो क्या आप इसे मुझे दोबारा सुनाना पसन्द करेंगे।"

ब्राह्मण ने उसे सब कुछ फिर से सुना दिया पर गीदड़ ने अपना सिर एक बार फिर ना में हिलाया जैसे उसकी समझ में कुछ भी नहीं आया हो।

वह दुखी हो कर बोला — "यह सब मेरे दिमाग में कुछ बैठ नहीं रहा। यह मेरे एक कान से अन्दर जा रहा है और दूसरे से बाहर निकले जा रहा है। मैं उस जगह जाना चाहता हूँ जहॉ यह सब हुआ था। तब शायद में कुछ फैसला कर सकूँ।"

सो दोनों चीते के पिंजरे के पास आये। चीता अभी भी वहॉ खड़ा खड़ा ब्राह्मण का इन्तजार कर रहा था और अपने दॉत किटकिटा रहा था और पंजों से जमीन खुरच रहा था।

जंगली जानवर गुस्से से बोला — "मैं तुम्हारा बहुत देर से इन्तजार कर रहा हूॅ। तुमने तो बहुत देर लगा दी। अब हमको अपना खाना खाना शुरू कर देना चाहिये।"

बदकिस्मत ब्राह्मण यह सुन कर डर गया उसके घुटने कॉपने लगे "हमारा खाना। कितनी अच्छी तरह से इसने यह कहा है।"

ब्राह्मण बोला — "जनाब आप मुझे पॉच मिनट दें ताकि मैं यहॉ खड़े इस गीदड़ को सारा मामला समझा सकूॅ। इसकी समझ ज़रा कमजोर है।"

चीता राजी हो गया। ब्राह्मण ने अपनी कहानी फिर से शुरू की। उसने अबकी बार कोई बात नहीं छोड़ी बल्कि उसे जितना बड़ा करके वह उसे बता सकता था उसने बताया।

बेचारा गीदड़ अपने पंजे मरोड़ते हुए बोला — "उफ़ मेरा बेचारा छोटा सा दिमाग। उफ़। मैं देखना चाहता हूॅ कि यह सब कैसे शुरू हुआ। तुम पिंजरे में थे जब चीता यहॉ से गुजरा।"

चीता चिल्लाया — "उफ़ तुम कितने बेवकूफ हो। पिंजरे में वह नहीं मैं था।"

गीदड़ भी डर के मारे कॉपने का बहाना करते हुए चिल्लाया — "हॉ हॉ मैं भी तो वही कह रहा हूॅ कि मैं पिंजरे में था – नहीं नहीं। मैं पिंजरे में नहीं था। उफ़ मेरी अक्ल को क्या हो गया है। अच्छा अच्छा चीता ब्राह्मण के अन्दर था और पिंजरा इधर से गुजर रहा था।

अरे नहीं नहीं। यह भी ठीक नहीं है। खैर आप मेरी चिन्ता न करें आप अपना खाना खाना शुरू करें क्योंकि मैं इस बात को कभी समझ ही नहीं सकता।"

गीदड़ की बेवकूफी पर गुस्सा होते हुए चीता चिल्लाया — "तुम समझोगे कैसे नहीं। मैं तुम्हें समझाता हूँ। देखो मैं चीता हूँ।"

गीदड़ डरते हुए बोला — "ठीक है माई लौर्ड।"

चीता आगे बोला — "और यह ब्राह्मण है।"

"है माई लौर्ड।"

चीता आगे बोला — "और यह पिंजरा है।"

"है माई लौर्ड।"

चीता फिर बोला — "और मैं पिंजरे में अन्दर था। आयी बात समझ में।"

गीदड़ डर कर बोला — "हॉ – नहीं – माई लौर्ड।"

चीता अबकी बार बहुत ज़ोर से चिल्ला कर बोला — "जब मैं कह रहा हूँ कि मैं था तो मैं था। इतनी ज़रा सी बात तुम्हारी समझ में क्यों नहीं आती।"

गीदड़ बोला — "जी। पर जनाब आप पिंजरे में घुसे कैसे।"

चीता बोला — "अरे मैं कैसे घुसा? क्यों, जैसे घुसते हैं।"

गीदड़ बड़ी दीन सी आवाज में बोला — "पर जनाब इसमें घुसते कैसे हैं।"

अब तक चीते का धीरज बिल्कुल खत्म हो चुका था। वह गुस्से में भर कर कूद कर पिंजरे में जा बैठा और बोला — "इस तरह से। अब तुम्हारी समझ में आया कि मैं इसमें कैसे घुसा?"

गीदड़ मुस्कुरा कर बोला — "यह तो बिल्कुल ठीक है।" कह कर उसने जल्दी से पिंजरे का दरवाजा बन्द कर दिया।

वह आगे बोला — "अगर आप मुझे आगे कुछ कहने का मौका दें तो मैं अब यह कहना चाहूँगा कि अब यह मामला ऐसा ही रहेगा जैसा कि पहले था।"

# 6 ब्राह्मण, मगर और लोमड़ा[11]

शेर और आदमी जैसी यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के भारत देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक दिन एक ब्राह्मण एक जंगल से गुजर रहा था कि एक मगर ने उसे वहॉ से जाते देखा तो उसको पुकार कर कहा — "मेहरबानी करके मेरी सहायता करो ओ ब्राह्मण। मैं अपने माता पिता से बिछड़ गया हूॅ। मेरे माता पिता गंगा नदी में रहते हैं। मैं गंगा नदी का रास्ता नहीं जानता सो मुझे वहॉ तक छोड़ दो।"

ब्राह्मण बहुत दयालु था। उसने मगर को एक थैले में रखा और उसको गंगा नदी तक ले जा कर नदी में छोड़ दिया। जैसे ही मगर थैले में से बाहर निकला तो मगर ने नीच नजर से ब्राह्मण की तरफ देखा और बोला "अब मैं तुम्हें खाऊॅगा। तुम मरने के लिये तैयार हो जाओ।"

ब्राह्मण तो यह सुन कर भौंचक्का रह गया। वह बोला — "तुम मुझे क्यों खाओगे। अभी तो मैंने तुम्हारी सहायता की है।"

ब्राह्मण ने उससे बच कर भाग जाना चाहा पर मगर ने उसकी टॉग पकड़ ली और उसको पानी में खींचने लगा।

---

[11] The Brahmin, the Crocodile and the Fox – a folktale from India (UP), Asia.
Taken from the Web Site :
http://www.kidsgen.com/stories/folk_tales/the_brahmin_the_crocodile_the_fox.htm

ब्राह्मण चिल्लाया — "तुम कितने बेवफा हो।"

इस पर मगर बोला — "मैं बेवफा नहीं हूॅ। मैं तो केवल उसी कहावत को मान रहा हूॅ कि "हर उस चीज़ को खा लो जिससे तुम्हारी ज़िन्दगी बच जाये।"

ब्राह्मण बोला — "मैं इस कहावत को नहीं मानता। यह बहुत ही जंगली कहावत है। हम कोई और ढूॅढते हैं जो यह बात तय कर सके कि तुम जो कह रहे हो वह ठीक है या गलत।

अगर हमको कोई अच्छा न्यायपूर्ण जज मिल जाये जो यह कहे कि तुम्हारी यह कहावत ठीक है तो तुम केवल मुझे ही नहीं बल्कि मेरे पूरे परिवार को खा सकते हो।"

मतलबी मगर ने सोचा "अगर मैं इसी समय ब्राह्मण को खा लेता हूॅ तो मेरे हाथ से उसके पूरे परिवार को खाने का सुनहरी मौका हाथ से चला जायेगा। सो उसने ब्राह्मण की टॉग छोड़ दी और तीन जजों से इस कहावत के बारे में उनकी राय जानने की सलाह दी।

दोनों चलने लगे। तो सबसे पहले एक आम का पेड़ सामने आया। ब्राह्मण ने अपने और मगर के बीच में हुई सारी कहानी उसको बतायी और बता कर उससे पूछा — "अब बताओ दोस्त कि क्या यह ठीक है कि "हर उस चीज़ को खा लो जिससे तुम्हारी ज़िन्दगी बचती हो।"

आम के पेड़ ने मुॅह लटका कर जवाब दिया — "आदमी भाई मुझे तो यह सच ही लगता है। देखो न। आदमी लोग मेरी छाया में

बैठते हैं पर फिर भी मेरे सारे फल खा जाते हैं। और इतना ही नहीं बाद में वह मुझे काट भी देते हैं।"

मगर और ब्राह्मण दोनों ने उसको धन्यवाद दिया और आगे बढ़ गये। कुछ दूर और चलने के बाद उन्हें एक गाय मिली। ब्राह्मण ने उसको भी बताया कि कैसे उसने मगर की सहायता की और फिर उससे भी पूछा कि क्या यह ठीक था कि "जो कोई चीज़ तुम्हारी ज़िन्दगी बचाये तुम उसको खा लो।"

गाय दुखी आवाज में बोली — "हॉ यह ठीक ही लगता है। देखो मैं आदमी को दूध देती हूॅ। उसको खेती करने के लिये बैल देती हूॅ पर वह मुझे काट कर खा जाता है। या फिर जब मैं इस लायक नहीं रहती कि मैं दूध दे सकूॅ या बैल पैदा कर सकूॅ तो वह मुझे जंगली जानवरों को खाने के लिये छोड़ देता है।"

यह सुन कर मगर ब्राह्मण की तरफ देख कर हॅसा और बोला — "देखो ब्राह्मण देवता, तीन में से दो जजों ने इस बात को स्वीकार कर लिया कि जो मैं कह रहा था वह ठीक था।"

ब्राह्मण कुछ नाउम्मीदी से बोला — "अभी तीसरे जज का फैसला बाकी है।"

कह कर वे फिर और आगे चले। कुछ दूर चलने के बाद उनको एक लोमड़ा मिला। ब्राह्मण ने उसको भी सारी कहानी सुनायी और उससे भी वही सवाल पूछा।

लोमड़ा चालाक था और होशियार था। वह बोला — "इससे पहले कि मैं आपके सवाल का जवाब दूँ ब्राह्मण जी क्या आप मुझे बतायेंगे कि यह इतना बड़ा मगर इस छोटे से थैले में कैसे बन्द था। यह तो मुझे कुछ नामुमकिन सा लग रहा है।"

मगर यह सुनते ही भड़क उठा और बोला — "क्या कहा तुमने नामुमकिन? यह नामुमकिन कैसे हो सकता है? मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि यह कैसे हो सकता है।" और तुरन्त ही थैले में सिमट कर बैठ गया।

यह देख कर ब्राह्मण को इशारा मिल गया। उसने एक बड़ा सा पत्थर उठाया और उसको मगर के सिर पर मार दिया। इस तरह उसने नीच मगर को पत्थर मार मार कर मार दिया।

लोमड़े ने मगर के शरीर का खाना बहुत दिनों तक खाया और ब्राह्मण की जान बच गयी। मगर को उसकी बेवफाई और लालची होने का फल मिल गया।

# 7 आदमी और सॉप[12]

शेर और आदमी जैसी यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के दक्षिण अफ्रीका देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

बहुत पहले की बात है कि एक बार एक आदमी सड़क पर जा रहा था कि जाते जाते उसको एक सॉप दिखायी दिया जो एक बड़े से पत्थर के नीचे फॅसा पड़ा था जो उसके ऊपर गिर पड़ा था।

सॉप ने आदमी से प्रार्थना की — "मेहरबानी करके मेरी सहायता करो। यह बड़ा पत्थर मेरे ऊपर गिर पड़ा है। इसकी वजह से मैं हिल भी नहीं सकता।

सूरज भी बहुत गरम है और उसकी गरमी भी मुझे मारे डाल रही है। अगर तुम मेरी सहायता नहीं करोगे तो मैं मर जाऊॅगा।"

आदमी बोला — "अगर मैं तुम्हारे ऊपर से यह पत्थर हटाऊॅगा तो तुम मुझे काट लोगे तब तुम्हारी बजाय मैं मर जाऊॅगा।"

सॉप ने पूछा — "मैं उस आदमी को नुकसान क्यों पहुॅचाऊॅगा जो मेरी सहायता करेगा। इसके अलावा मैं इतना कमजोर हूॅ कि मुझमें केवल इतनी ही ताकत है कि इस घटना से ठीक होने के बाद मैं अपने घर तक रेंगता हुआ चला जाऊॅ।"

---

[12] The Man and the Snake – a folktale from South Africa, Africa. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=114
Retold and written by Mike Lockett.

वह आदमी बेचारा बहुत ही भला और दयालु आदमी था वह किसी को दुखी नहीं देख सकता था चाहे वह सॉप ही क्यों न हो।

सो उसने सॉप के ऊपर से वह बड़ा पत्थर हटा दिया। पर जैसे ही उस आदमी ने वह पत्थर हटाया सॉप ने अपना सिर ऊपर उठाया और अपना मुँह खोल कर बोला — "अब तुम मेरे काटने के लिये तैयार हो जाओ।"

आदमी बोला — "यह तो ठीक नहीं है। तुमने तो मुझे न काटने का वायदा किया था अगर मैंने तुम्हारी सहायता की तो।"

सॉप बोला — "जब तुमने मुझे देखा था तो तुम जानते थे मैं एक सॉप था। तुम यह भी जानते थे कि सॉप काटते हैं। तुमने यह कहा भी था कि अगर तुमने मुझे आजाद कर दिया तो मैं तुमको काट लूँगा। तुम बिल्कुल ठीक थे। अब तुम मेरे काटने के लिये तैयार हो जाओ बस।"

आदमी बोला — "ठहरो ठहरो, यह सब ठीक नहीं है।"

सॉप बोला — "तो फिर यह कौन बतायेगा कि ठीक क्या है?"

आदमी बोला — "कम से कम हम किसी और जानवर से यह पूछ सकते हैं कि तुम्हारा मुझे काटना ठीक है या नहीं।"

सॉप बोला — "ठीक है तुम पूछना चाहते हो तो पूछ सकते हो पर मैं जानता हूँ कि दूसरे लोग भी मुझ ही से राजी होंगे।"

सो पहले वे लोग हयीना[13] के पास गये। आदमी ने हयीना ने पूछा — "क्या सॉप के लिये यह ठीक है कि वह मुझे काटे जबकि मैंने एक बड़ा पत्थर उसके ऊपर से हटा कर उसकी जान बचायी है?"

हयीना ने सोचा कि जब आदमी ने मेरे साथ कभी भी ठीक से बरताव नहीं किया तो सॉप भी उसके साथ ठीक से बरताव क्यों करे?

इसके अलावा उसने सोचा कि जब सॉप उस आदमी को काट लेगा और वह मर जायेगा तो उसको भी आदमी खाने के लिये मिल जायेगा। सो उसने आदमी से कहा कि सॉप ठीक कह रहा था।

सॉप ने उस आदमी को काटने के लिये अपना सिर उठाया कि आदमी फिर बोला — "थोड़ा और इन्तजार करो मैं एक और जानवर से पूछ लूँ।"

सो वे आगे चले तो उनको एक खरगोश मिला। सॉप ने खरगोश की तरफ देख कर घूरा और बोला — "क्या मेरे लिये यह ठीक है कि मैं आदमी को उसके मेरे ऊपर से पत्थर हटाने के बाद काटूँ?"

खरगोश जानता था कि अगर वह सॉप की तरफ से नहीं बोला तो सॉप उसको काट लेगा इसलिये वह बोला — "आदमी ने मेरी कभी कोई

[13] Hyena – a tiger-like animal – see his picture above.

सहायता नहीं की तो मैं उसकी सहायता क्यों करूँ□सो यह ठीक है कि तुम आदमी को काट लो।"

सो सॉप ने एक बार फिर आदमी को काटने के लिये अपना सिर उठाया। आदमी ने नाउम्मीदी से कहा — "ठीक है इससे पहले कि तुम मुझे काटो हम एक जानवर को और देख लें। मेरे ऊपर मेहरबानी करो।"

सॉप राजी हो गया। उसी समय एक गीदड़ उधर से गुजरा। आदमी ने उस गीदड़ से पूछा — "क्या सॉप के लिये यह ठीक है कि उसके ऊपर से पत्थर हटा कर उसकी जान बचाने के बदले में वह मुझे काटे?"

गीदड़ बोला — "मुझे तो यह विश्वास ही नहीं हो रहा कि सॉप किसी ऐसे पत्थर के नीचे आ सकता है जिसको वह हटा कर न निकल सकता हो। जब तक मैं अपनी ऑखों से न देख लूँ मैं इस बात पर विश्वास कर ही नहीं सकता। तुम मुझे वह जगह दिखाओ जहॉ यह घटना हुई थी।"

सो सब लोग वहॉ गये जहॉ सॉप पत्थर के नीचे बैठा था। वहॉ पहुँच कर गीदड़ ने सॉप से कहा — "सॉप, अब तुम लेट जाओ और मुझे देखने दो कि वह पत्थर तुम्हारे ऊपर कैसे रखा था।"

सॉप एक जगह लेट गया और आदमी ने उसके ऊपर वह पत्थर रख दिया जो उसने पहले हटाया था। गीदड़ ने पूछा — "क्या आदमी ने तुमको इसी हालत में पाया था?"

आदमी और सॉप दोनों एक साथ बोले — "हॉ।"

आदमी फिर वह पत्थर हटाने के लिये आगे बढ़ा तो गीदड़ बोला — "तुम बिल्कुल ही बेवकूफ हो क्या? सॉप के ऊपर से पत्थर नहीं हटाओ। वह तुमको काटना चाहता था और तुम उसको बचाना चाहते हो? अगर तुम यह पत्थर हटा दोगे तो वह तुमको फिर से काट लेगा। चलो यहॉ से चलें। यह यहीं ठीक है।"

आदमी और गीदड़ सॉप को वहीं पत्थर के नीचे छोड़ कर चले गये। इस तरह गीदड़ ने आदमी की जान बचायी।

# 8 एक गोरा और एक सॉपिन[14]

यह लोक कथा भी इससे पहले वाली जैसे ही लोक कथा है और यह भी दक्षिण अफ्रीका की ही है। दोनों में कुछ ज़्यादा फर्क नहीं है।

एक बार की बात है कि एक गोरे आदमी[15] को एक सॉपिन मिली जो एक बहुत बड़े पत्थर के नीचे दबी पड़ी थी। इससे वह उठ ही नहीं पा रही थी। गोरे को उसे इस हालत में देख कर दया आ गयी तो उसने उसके ऊपर से पत्थर हटा दिया। पर जैसे ही उसने उसके ऊपर से पत्थर उठाया तो व्ह उसको काटना चाहती थी।

गोरा डर गया और बोला — "रुको। पहले हम कुछ अक्लमन्द लोगों से पूछ लें कि क्या तुम्हारा मुझे इस तरह से काटना ठीक है।"

सो वे सबसे पहले हयीना[16] के पास गये। उसके पास जा कर गोरे ने उससे पूछा — "क्या यह ठीक है कि यह सॉपिन मुझे काटे जबकि मैंने इसको एक बड़े से पत्थर के नीचे से निकाल कर इसकी सहायता की है क्योंकि वहॉ से तो यह हिल भी नहीं सकती थी।"

हयीना ने सोचा कि उसको भी गोरे के शरीर का कुछ हिस्सा खाने के लिये मिल

[14] The White Man and Snake – a folktale from South Africa, Africa.
Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft25.htm

[15] Translated for the words "White Man". Since South Africa is mostly Black when the Europeans came there they were known as "White Men".

[16] Hyena is a tiger-like animal – see its picture above.

जायेगा सो वह बोला — "अगर इसने तुम्हें काट लिया तो क्या हुआ। इसका काम काटना है यह तो काटेगी ही।"

तब वह सॉपिन उसको फिर से काटने के लिये तैयार हुई तो गोरा बोला — "ज़रा रुको। हम किसी और अक्लमन्द से भी पूछ लें ताकि मुझे यह ठीक से पता चल जाये कि तुम ठीक हो या नहीं।"

वे आगे चले तो उनको एक गीदड़ मिला तो गोरे ने उससे भी यही पूछा — "क्या यह ठीक है कि यह सॉपिन मुझे काटे जबकि मैंने इसको एक बड़े से पत्थर के नीचे से निकाल कर इसकी सहायता की है क्योंकि यह वहॉ से तो यह हिल भी नहीं सकती थी।"

गीदड़ कुछ सोच कर बोला — "मुझे तो यह विश्वास ही नहीं हो रहा कि यह सॉपिन किसी ऐसे पत्थर के नीचे भी दबी हो सकती है जिसके नीचे से से यह निकल न सके। जब तक मैं खुद इसको वैसे ही पड़ा न देख लूॅ तब तक मैं विश्वास नहीं कर सकता।

इसलिये चलो वहीं चलो जहॉ तुम्हारा कहना है कि यह उस पत्थर के नीचे पड़ी हुई थी।

सो वे लोग उसी जगह आये जहॉ से पत्थर हटा कर गोरे ने उसको बाहर निकाला था। गीदड़ ने कहा — "अब सॉपिन तुम उसी जगह वैसे ही लेट जाओ जब तुम्हें इस आदमी ने बाहर निकाला था।" सो वह सॉपिन वहॉ वेसे ही लेट गयी जैसे वह पहले लेटी हुई थी।

गोरे ने भी उसको उसी तरह से फिर से पत्थर से ढक दिया जैसे उसने जब वह पत्थर उठाया था जब वह वहॉ लेटी हुई थी। अब वह वहॉ से बिल्कुल भी नहीं हिल पा रही थी।

तो अब वह गोरा फिर से उसके ऊपर से पत्थर हटाना चाह रहा था कि गीदड़ बोला — "अरे यह क्या बेवकूफी कर रहे हो। एक बार पत्थर हटाने की बेवकूफी कर के क्या तुम्हारा अभी मन नहीं भरा। क्या तुम चाहते कि जब तुम उसके ऊपर से पत्थर हटा दो तो वह फिर से बाहर निकल कर फिर से तुम्हें काटने लगे।"

सो उन्होंने सॉपिन को वहॉ उसी पत्थर के नीचे छोड़ा और आगे चले गये। इस तरह गोरे की बेवकूफी से सॉपिन उसको काटने वाली थी और गीदड़ की अक्लमन्दी से वह सॉपिन के काटे से बच गया।

# 9 एक यात्री का कारनामा[17]

ऐसा कहा जाता है कि एक बार एक आदमी ऊँट पर चढ़ कर यात्रा करने निकला। यात्रा के दौरान वह एक ऐसी जगह आ पहुँचा जहॉ उसी कारवॉ के लोगों ने आगे बढ़ने से पहले आग जला रखी थी।

वहॉ पंखे जैसी हवा चल रही थी जिससे उस आग के अंगारे और जल रहे थे सो एक बार उससे एक लपट पैदा हो गयी। इससे चिनगारियॉ पैदा हो गयीं और वे जंगल की तरफ उड़ गयीं।

वहॉ कुछ सूखी लकड़ी पड़ी थीं वे चिनगारियॉ उनके ऊपर जा कर पड़ीं तो उनमें आग लग गयी। वह आग ऐसी दिखायी दे रही जैसे सारे मैदान में ट्यूलिप के फूल[18] खिल गये हों।

इस आग के बीच एक बहुत बड़ा सॉप था जो आग की लपटों में घिरा पड़ा था। उसके वहॉ से बच कर भागने का कोई तरीका नहीं था। वह या तो मछली की तरह से भुन जाने वाला था या फिर

[17] The Traveller's Adventure (Tale No 8) – a folktale from Arabia, Asia.
Adapted from the Web Site :
https://www.worldoftales.com/Oriental_folktales.html
Taken from the Book "Folk-lore and Legends : Oriental", by Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. 1889. 13 Folktales.

[18] Tulip flowers – see their picture above.

तीतर की तरह से भुन कर मेज पर रखा जाने वाला हो रहा था कि उसकी ऑखों से खून टपकने लगा।

उसने देखा कि एक आदमी अपने ऊँट के साथ वहॉ रुका हुआ है तो उसने उससे प्रार्थना की — "क्या आप मेहरबानी करके मेरे ऊपर दया करेंगे। क्या आप मेरी वह गॉठ खोल देंगे जिससे कि मैं यहॉ बॅधा हुआ हूँ।"

अब यह यात्री तो एक बहुत ही भला आदमी था और बहुत ही धार्मिक था। जब उसने सॉप की शिकायत सुनी और उसकी इतनी खराब हालत देखी तो उसके दिमाग में आया कि "यह तो सॉप है और यह तो आदमी का दुश्मन है पर क्योंकि इस समय यह परेशानी में है इसलिये मुझे इसकी सहायता करनी चाहिये। सहायता का फल तो हमेशा ही अच्छा होता है और उससे मुक्ति भी मिलती है।"

इस तरह विचार करके उसने एक थैला अपने भाले की नोक पर लटकाया और उसको सॉप की तरफ बढ़ा दिया। सॉप यह देख कर बहुत खुश हुआ कि अब वह इस आग से बच सकता है। जैसे ही थैला उसके पास तक आया तो वह उसके थैले में घुस गया। आदमी ने थैला वापस खींच लिया और वह आग से बच गया।

थैला बाहर खींच कर आदमी ने उसे थैले से बाहर निकाला और उससे कहा — "अब तुम जहॉ चाहो जा सकते हो पर अपने बचने के लिये भगवान को धन्यवाद देना मत भूलना। अब तुम जा कर आराम करो और आदमियों को तंग करना छोड़ दो क्योंकि जो ऐसा

काम करते हैं वे बेईमान होते हैं। दूसरी बात – भगवान से डरो और किसी को कभी दुख मत पहुँचाओ यही असली मुक्ति है।"

सॉप बोला — "ओ नौजवान भगवान तुम्हें शान्ति दे क्योंकि सच में मैं यहॉ से तब तक नहीं जाने वाला जब तक कि में तुम्हें और तुम्हारे इस ऊँट को काट न लूँ।"

आदमी चिल्लाया — "मगर ऐसा कैसे? क्या मैंने तुम्हारा कुछ भला नहीं किया? मेरी दया का ऐसा बदला क्यों? मैंने तो तुम्हारा भला करने की कोशिश की पर तुम मेरे साथ ऐसा अन्याय क्यों कर रहे हो?"

सॉप बोला — "यह तो तुम ठीक कहते हो। तुमने मेरे ऊपर दया तो दिखायी है पर यह दया तुमने एक अयोग्य चीज़ पर दिखायी है। जब तुम जानते हो कि मैं लोगों को काटता हूँ तो इसके फलस्वरूप तुमको अपने आपको भी उसी नियम में रखना चाहिये था जिसमें एक योग्य आदमी को नुकसान पहुँचाने की सजा मिलती है।

इसके अलावा सॉप और आदमी में बहुत पुरानी दुश्मनी है। और जो लोग आगे तक का देख पाते हैं उनके लिये अक्लमन्दी का नियम यही है कि वह दुश्मन के सिर पर वार करें।

अगर तुम्हें अपनी रक्षा करनी थी तो तुम्हें मुझे मर जाने देना चाहिये था पर मेरी तरफ दया दिखा कर तुमने अपनी सुरक्षा छोड़ दी। इसलिये अब यह जरूरी है कि मैं तुम्हें काट लूँ ताकि तुम्हारे साथ हुए इस काम को देख कर लोग तुमसे कुछ सीख लें।"

आदमी चिल्लाया — "ओ सॉप तुम न्याय करने वालों की कोई भी टीम बुलालो और उनमें से किसी से भी पूछ कर मुझे बताओ कि यह किसी भी धर्म की कौन सी किताब में लिखा है कि जिसने भी तुम्हारे साथ कोई अच्छाई की हो तुम उसके साथ बुरा करो। या ऐसा कहॉ होता है कि तुम अच्छाई का बदला बुराई से दो। या जिस किसी ने तुमको सुख दिया हो उसके बदले में तुम उसको दुख दो।"

सॉप बोला — "ऐसा आदमियों की दुनियॉ में होता है। मैं तो केवल तुम्हारे नियमों के ऊपर ही चल रहा हूॅ। जो चीज़ मैंने तुमसे खरीदी है वही मैं तुम्हें बेच रहा हूॅ। तुम एक पल के लिये वह चीज़ खरीद कर तो देखो जो तुम बरसों से बेच रहे हो।"

यात्री ने उसको समझाने की बहुत कोशिश की पर सॉप हमेशा यही कहता रहा — "मै तुम्हारे साथ उसी तरह से बरताव कर रहा हूॅ जैसा कि तुम मेरे साथ करते हो।"

आदमी इस बात से इनकार करता रहा पर फिर बोला — "चलो ठीक है हम कुछ जजों को बुलाते हैं। अगर तुम अपनी बात साबित कर सके तो जैसा तुम कहोगे मैं वैसा ही करूॅगा।"

यह सुन कर सॉप ने इधर उधर देखा तो देखा कि पास में ही कुछ दूरी पर एक गाय चर रही थी। वह आदमी से बोला — "चलो हम लोग इस सवाल के बारे में इस गाय से पूछते हैं।"

सो वे गाय के पास चले। जब वे गाय के पास पहुॅचे तो सॉप ने अपना मुॅह खोल कर उससे पूछा — "ओ गाय अगर किसी को

किसी से कोई अच्छाई मिले तो उसको उसे वापस क्या देना चहिये।"

गाय बोली — "अगर तुम मुझसे आदमी की तरफ से पूछना चाहते हो तो अच्छाई का बदला हमेशा ही बुरा होता है। मैं तुम्हें अपनी बात बताती हूँ।

मैं एक बार बहुत समय के लिये एक किसान के पास थी। वहॉ मैं हर साल एक बच्चे को जन्म देती थी। उसके घर के लिये दूध और घी[19] देती थी। उसके बच्चों की ज़िन्दगी मेरे ही ऊपर निर्भर थी।

पर जब मैं बूढ़ी हो गयी और मेरे बच्चे होना बन्द हो गये तो उसने मुझे रखने से मना कर दिया और मुझे मरने के लिये जंगल में धकेल दिया। अपना खाना ढूँढने और आराम से घूमने के बाद मैं मोटी हो गयी तब मेरा पुराना मालिक मेरी यह हालत देख कर एक कसाई को साथ ले आया और उसने मुझे उसे बेच दिया। आज मैं काट दी जाऊँगी।"

सॉप बोला — "तुमने सुना इस गाय ने क्या कहा। बस अब तुम मरने के लिये जल्दी से तैयार हो जाओ।"

आदमी बोला — "केवल एक आदमी की राय पर काम करना कोई अक्लमन्दी नहीं है। हमको किसी एक और की राय और लेनी चाहिये।"

[19] Ghee is the clarified butter

सॉप ने फिर चारों तरफ देखा तो देखा कि पास में ही एक पेड़ खड़ा है। उस पर एक भी पत्ता नहीं था। उसकी नंगी टहनियॉ आसमान तक जा रही थीं।

सॉप बोला — "चलो इस पेड़े से चल कर पूछते हैं।"

सो दोनों उस पेड़ के पास पहुॅचे। वहॉ जा कर सॉप बोला — "किसी की अच्छाई का बदला उसको क्या देना चाहिये।"

पेड़ बोला — "आदमियों में ऐसा होता है कि भलाई का बदला बुराई और नुकसान से दिया जाता है। और मैं जो ऐसा सोचता हूॅ उसको साबित भी कर सकता हूॅ।

मैं एक पेड़ हूॅ जो इस दुखी हालत में इस तरह एक टॉग पर खड़ा हो कर बढ़ रहा हूॅ। एक समय था जब मैं फल फूल रहा था और हरा था। सबकी सेवा कर रहा था। जब कोई आदमी थका हारा गरमी का मारा इस तरफ से निकलता था वह मेरे साये में बैठता था। मेरी शाखाओं के नीचे सो जाया करता था।

जब उस आदमी की ऑखों से थकान का बोझ थोड़ा हटता तो वह ऊपर की तरफ मेरी शाखाओं की तरफ देखता और कहता — "तुम्हारी टहनियों के तो तीर बहुत अच्छे बनेंगे।" "तुम्हारी उस डाली का तो हल बहुत अच्छा बनेगा।" "इस पेड़ के तने के तो तख्ते बहुत अच्छे बनेंगे।

अगर उनके पास कोई कुल्हाड़ी या आरी होती तो वे मेरी शाखाओं में से कुछ को चुनते और उन्हें काट कर ले जाते। इस

तरह जिन लोगों को मैं आराम देता वे मुझे दुख दर्द दे कर जाते। जबकि मैं उनकी चिन्ताओं के समय में अपनी छाया दे कर उनको आराम देता वे मुझे जड़ से उखाड़ने की सोचते।"

सॉप बोला — "देखा तुमने। दो जज तो हो गये इसलिये अब तुम सोच लो तुम्हें क्या करना है वरना मैं तुम्हें काटने वाला हूँ।"

आदमी बोला — "सॉप यह तो तुम ठीक कह रहे हो पर ज़िन्दगी के लिये प्यार बहुत ज़्यादा होता है और जब तक आदमी के शरीर में ताकत होती है दिल से उसका प्यार निकालना बहुत मुश्किल है।

मेहरबानी करके एक आखिरी जज और देख लें फिर वह जो कुछ भी कहेगा मैं उसे मान लूँगा।"

अब यह बहुत अच्छा हुआ कि वहीं पास में एक लोमड़ा खड़ा हुआ था। वह इनकी बहस सुन रहा था। वह इनके पास आया। सॉप ने जब उसे पास खड़े देखा तो बोला — "यह देखो यह लोमड़ा है चलो इसी से पूछते हैं।"

पर इससे पहले कि आदमी कुछ बोलता लोमड़ा चिल्लाया — "क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि भलाई का बदला हमेशा ही बुराई होता है। पर तुमने इस सॉप के साथ ऐसी क्या अच्छाई की है जिसके लिये तुम्हें इस बुराई की सजा भुगतनी पड़ रही है।"

यह सुन कर आदमी तो कॉप गया फिर भी उसने सॉप को बचाने की घटना पूरी की पूरी उसको कह सुनायी।

लोमड़ा बोला — "तुम एक बहुत ही अक्लमन्द आदमी नजर आते हो फिर तुम मुझसे झूठ क्यों बोल रहे हो। एक अक्लमन्द आदमी झूठ कैसे बोल सकता है।"

सॉप बोला — "लोमड़े भाई यह आदमी सच बोल रहा है। तुम इसका यह थैला देखो जिसमें रख कर इसने मुझे बचाया है।"

लोमड़ा आश्चर्यचकित होने का बहाना करते हुए बोला — "अरे इस बात पर तो मैं विश्वास कर ही नहीं सकता। तुम जैसे बड़े सॉप इस छोटे से थैले में कैसे आ सकते हो।"

सॉप बोला — "लामड़े भाई मैं इसके अन्दर आ सकता हूॅ अगर तुमको इस बात पर विश्वास नहीं हो रहा तो मैं तुम्हें इस थैले में दोबारा घुस कर दिखा सकता हूॅ।"

लोमड़ा बोला — "क्या सचमुच में। अगर तुम मुझे इस थैले में घुस कर दिखा दो तो मैं तुम्हारा विश्वास कर लूॅगा और फिर तुम दोनों का झगड़ा सिलटा दूॅगा।"

यह सुन कर यात्री ने अपने थैले का मुॅह खोल दिया अऔर सॉप लोमड़े के अविश्वास पर कुछ गुस्सा सा होते हुए उस थैले में घुस गया। जैसे ही वह अन्दर घुसा लोमड़ा चिल्लाया — "ओ नौजवान जब तुम अपने दुश्मन को पकड़ लो फिर उस पर दया दिखाने की कोई जरूरत नहीं है।

जब दुश्मन को हरा दो और वह तुम्हारे काबू में हो तो अक्लमन्दी इसी में है कि उसके ऊपर कभी कोई दया नहीं करनी चाहिये।"

यात्री ने उसका इशारा समझा थैले का मुँह बॉधा और एक पत्थर के ऊपर दे कर मार दिया। इससे सॉप मर गया और उसने अपनी जाति के लोगों की जानें बचा लीं।

# एक कहानी कई रंग की सीरीज़ में

**1** बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियॉ
**2** टाम थम्ब जैसी कहानियॉ
**3** छह हंस जैसी कहानियॉ
**4** तीन सन्तरे जैसी कहानियॉ
**5** स्नो व्हाइट जैसी कहानियॉ
**6** सोती हुई सुन्दरी जैसी कहानियॉ
**7–1** सूअर राजा जैसी कहानियॉ**–1**
**7–2** सूअर राजा जैसी कहानियॉ**–2**
**8** जूते पहने हुए बिल्ला जैसी कहानियॉ
**9** हैन्सैल और ग्रैटैल जैसी कहानियॉ
**10** रैड राइडिंग हुड जैसी कहानियॉ
**11–1** सिन्डरैला जैसी कहानियॉ — यूरोप में**–1**
**11–2** सिन्डरैला जैसी कहानियॉ — यूरोप में**–2**
**12** दुनियॉ में कितनी सिन्डरैला
**13** रम्पिलटिल्टस्किन जैसी कहानियॉ
**14** अली बाबा और चालीस चोर जैसी कहानियॉ
**15** मगर और बन्दर जैसी कहानियॉ
**16** मेंढकी राजकुमारी जैसी कहानियॉ
**17** शेर और आदमी जैसी कहानियॉ

# देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

**Facebook Group**
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

# लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

**1998** में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**